Subj-philosophy

Ba-2nd

Paper-3

Unit-4

Topic-postulates of morality ,part-1

By-Dumrendra Rajan

नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ

- यहां ऐसी मान्यताओं की बात की गयी है **जिसके बिना नैतिकता की बात नहीं की जा सकती है** ;इसलिए इसे नैतिकता की आवश्यक मान्यताएँ कही जाती है|
- ये मान्यताएँ तीन हैं-1. **व्यक्तित्व(personality)** 2. **विवेक(Reason)** 3.**आत्मनियंत्रण(Self-determination).. ..**

व्यक्तित्व(personality)

- व्यक्तित्व नैतिक निर्णय की आवश्यक मान्यता है;वयक्तित्व का विचार वास्तव में आत्मविचार और आत्मनियंत्रण का संकेत करता है|
- **जीव जिसकी क्रिया अपनी इच्छा से हो तथा वह उसके लिए उत्तरदायी हो** तभी उसका कार्य नैतिकता के मापदंड के अनुरूप होगा| ....

जारी है

- क्रियाएं तो पेड़-पौधें तथा पशुओं के द्वारा भी की जाती है लेकिन चेतना और स्वचेतना का अभाव रहता है |
- जिसके कारण यहां व्यक्तित्व का अभाव है इसलिए इनकी क्रियाएं 'नैतिकता' की परिधि से बाहर है|
- नैतिकता का निर्णायक भी वही है,जिसे नैतिक सिद्धांतों का ज्ञान हो, अर्थात व्यक्ति हो|

वयक्तित्व जारी है

- ...**कालडरवुड** ने कहा है"वयक्तित्व ही नैतिकता का आधार है"
- जहां इच्छाओं में भेद करने की शक्ति हो, प्रयोजन और साधन तय करने की क्षमता हो तथा स्वतंत्र इच्छा हो ,वहीं व्यक्तित्व भी होगा और नैतिकता भी

विवेक (Reason)

- मानव **भावना** और **बुद्धि** का दास है|
- भावना,काम मानव का एक महत्वपूर्ण पक्ष है जो मानव के अलावा पशु में भी पाया जाता है |
- लेकिन बुद्धि पक्ष के द्वारा मानव अपने इस पक्ष पर नियंत्रण रखता है और अपने जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है|
- बौद्धिक पक्ष मनुष्य का वैचारिक,तार्किक पक्ष है जिसके द्वारा वह

इच्छाओं का विचार ,चुनाव ,साध्य-साधन विचार का निर्माण करता है|
जिससे उसके कर्म नैतिक बनते हैं, विवेक से रहित मनुष्य पशु के समान है|
जिसके कर्मों का न महत्व है और न ही उसका नैतिक निर्णय संभव है|
अत: विवेक नैतिकता की दूसरी आवश्यकता है|